एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

पिछले शुमारे से आगे

3– ''आलिम'' (सर्वज्ञाता) हैः– अर्थात सभी चीज़ों से अवगत है वह किसी भी चीज़ के पैदा होने के पहले, पैदा होने के बअ्द या नष्ट या अस्तित्वहीन हो चुकने के बअ्द भी अवगत है। अर्थात परिवर्तन ज्ञान वस्तु में होता है ज्ञाता में नहीं। ईश्वर को अपनी ज़ात का ज्ञान है और उसकी ज़ात (हस्ती) ही प्रत्येक विद्यमान की कारक है। प्रत्येक वस्तु उसके ही इरादे से होती है। वही प्रत्येक वस्तु के बाक़ी रहने का कारण है। जब प्रवर्तक का ज्ञान होता है तो अनिवार्यतः परिवर्तित का ज्ञान भी होता है उदाहरर्णाथ सूरज के कारण धूप होती है जब यह ज्ञान हुआ कि सूर्य मौजूद है तो अनिवार्य रूप से यह भी मअ्लूम हो जाएगा कि धूप भी है चाहे बादल के ओट के कारण हम तक पहुँच न रही हो।

4– हयि (जीवित) हैः– कुर्आने मजीद में यह शब्द बहुत सी आयतों में आया है। ''अल्लाह ही मौत देता है, अल्लाह ही ज़िन्दगी देता है मगर वह स्वयं ऐसा ज़िन्दा है जिसके लिए मृत्यु नहीं।'' परन्तु उसके जीवित होने का यह अर्थ नहीं है कि हमारी भांति उसके शरीर या आत्मा है कि जब दोनों में सम्पर्क हो तो हम जीवित रहें। और सम्पर्क टूट जाए तो मुर्दा हो जाएँ उसके यहाँ ज़िन्दगी और मौत का अर्थ यह है कि वह ज्ञाता और शक्तिमान है और जो ज्ञाता और शक्तिमान हो उसको ज़िन्दा कहा जाता है। अतः वह भी जीवित है (इस विशेषता का अलग से वर्णन ही इसलिए किया जाता है कि लफ़्ज़ ''हयि'' से कोई धोखे में न पड़ जाए और अल्लाह के लिए भी शरीर और आत्मा न समझ बैठे।)

5– ''मुरीद'' (इरादे वाला या संकल्प वाला):– कार्य दो प्रकार के होते हैं। एक विवशतावश एक स्वेच्छापूर्ण। विवशतावश कार्य वह है जिसके न करने की शक्ति न हो। जैसे आग की ताप और हिम की शीत। स्वेच्छा पूर्ण कार्य वह है जिसके करने या न करने दोनों की शक्ति हो जैसे लिखना या बोलाना। 'मुरीद' का अर्थ यह है कि अल्लाह के कार्य आग की ताप की तरह नहीं जिसमें इरादे को कोई दख़ल न हो। बल्कि यथा अवसर जो बात वह उपयुक्त समझता है वह करता है। कुछ बातों को ज्ञान इंद्रियों से होता है जैसे गर्मी या ठण्डक या किसी वस्तु की नर्मी या सख़्ती को छू के अनुभूत किया जा सकता है। या रंगों को देख के, आवाज़ों को सुनके महसूस करते हैं। अल्लाह के लिए यह इंद्रियाँ तो नहीं हैं। न वह छूता है। न उसके आँखें, कान, नाक और जिव्हा है। अतः कोई यह सोच सकता है चूँकि अनुभूति के ज्ञान का माध्यम इंद्रियाँ है। और यह इंद्रियाँ अल्लाह के लिए नहीं हैं तो उसका ज्ञान भी न होता होगा। इस शंका का समाधान यह है कि चूँकि अल्लाह प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष सबका ज्ञाता है। और उसका ज्ञान सभी वस्तुाओं को घेरे हुए है। अतः उसे इन चीज़ों का भी ज्ञान है। बस अन्तर यह है कि हम माध्यम और उपकरणों के मुह्ताज है और अल्लाह इनका मुह्ताज नहीं। जैसा कि कुर्आन में आया है। ''निगाहें उसे नहीं

पातीं परन्तु वह निगाहों को पा लेता है। वह अति सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है।''

(सूरः–6 आयत–104)

7– ''मुतकल्लिम'' (वक्ता):– उसकी वक्तृता हमारे समान नहीं उसने मानव के दिग्दर्शन हेतु किताबें भेजीं। अपनी इच्छा और उद्देश्य से पैग़म्बरों को अवगत किया और इसके लिए वही साधन अपनाये जिनसे एक मनुष्य दूसरे का मतलब समझ सकता है। अल्लाह ने भी अक्षरों और शब्दों के द्वारा अपना उद्देश्य हम तक पहुँचाया। उसके ''मुतकल्लिम'' होने का यही अर्थ है। ऐसा नहीं है कि हमारे ही समान उसकी हस्ती में भी आवाज़ क़ायम हो। उसके ''मुतकल्लिम'' होने का अर्थ यह है कि जिस वस्तु में भी चाहता है अपनी इच्छा या संकल्प से वाणी पैदा कर देता है।

8– ''सादिक़'' (सत्यवक्ता):– अल्लाह मुतकल्लिम है। लेकिन वाक् दो प्रकार का होता है। एक सच्चा और एक झूठा। अल्लाह के वाक् में असत्य और झूठ की गुन्जाइश नहीं। क्योंकि झूठ या तो अज्ञान और मूर्खता के कारण बोला जाता है। या किसी मजबूरी वश। अल्लाह सर्वज्ञाता भी है सर्वशक्तिमान भी। उसके विषय में न तो अज्ञान की कल्पना की जा सकती है, क्योंकि यह उसके सर्वज्ञाता होने के विपरीत है। और न मुह्ताज होने की, क्योंकि यह उसकी शक्ति के विपरीत है। अतः ईश्वर के लिए असत्य सम्भव नहीं।

सिफ़ाते सलबिया

1– उसका कोई ''शरीक'' नहीं है। तौहीद यानी अल्लाह का एक होना ऐसा यथार्थ है जिसको कोई ऐसा समझदार जो अल्लाह को मानता है नकार नहीं सकता अब यह प्रकरण इतना उज्वलित हो गया है कि जिन धर्मों में अद्वैतवाद की मिलावट भी है वह भी अपने को ऐन–केन प्रकारेण एकेश्वरवादी सिद्ध करना चाहते हैं। एकेश्वरवाद को सिद्ध करने के लिए निम्न संकेत किये जाते हैं।

1– पूरी सृष्टि की व्यवस्था की यक रंगी साक्षीहै कि स्रष्टा एक ही है।

2– किस बात से हमें अल्लाह का वजूद मानने पर विवश किया। वह यही तो है कि सृष्टि का अस्तित्व बताता है कि सृष्टा का अस्तित्व आवश्यक है। तो फिर एक सृष्टा मान लेने के बअ्द किसी अन्य सृष्टा के लिए कोई तर्क नहीं बचता।

3– अल्लाह अपने अस्तित्व में किसी को मुहताज नहीं। क्योंकि मुहताज होगा तो सम्भाव्य हो जाएगा और इसके लिए किसी और ख़ुदा की आवश्यकता होगी। अगर दो अल्लाह मान लें तो आवश्यक होगा कि इनके दो अंश भी माने। एक वह समान अंश जिसके कारण दोनों अल्लाह हैं और एक वह अंश जिसके कारण दो हुए। जैसे करीम और ख़ालिद दो मनुष्य हैं। यह मानव होने के नाते मानवता इनका समान अंश है। लेकिन रंग रूह और आकार प्रकार के हिसाब से अलग–अलग है। जब दो ख़ुदा होंगे तो कम से कम दो अंश दोनों में अवश्य होंगे। एक वह समान अंश जिनके कारण दोनों को अल्लाह कहा जाए। दूसरा वह अंश जिसके आधार पर दो अलग हस्तियाँ हुईं। अतएव दोनों ईश्वर दो अंशों से यौगिक हुए। दोनों अपने अस्तित्व में मुहताज हो गये और अल्लाह न रहे।

आज अगरचे अधिकांश लोग अपने को एकेश्वरवादी कहते हैं। परन्तु इस्लाम की विशिष्टता यह है कि यह न तो ईश्वर की ज़ात (हस्ती) में किसी को शरीक कहता है और न विशेषताओं और गुणों में। और इस्लाम में अल्लाह के अलावा किसी अन्य की उपासना और पूजन की अनुमति नहीं है। **(जारी)**